## श्री रेवणसिद्ध पंचपदी

पद ९०

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

रेवणसिद्धा तूं पाही मला। जन्म जातो हा वाया।।ध्रु.।। त्रिविधताप तापत्रय तापलों। शराण आलों तुझे पाया।।१।। भावभक्ति मी कांहींच नेणें। मति नाहीं तुझे गुण गाया।।२।। माणिक म्हणे जन्म मरण निवारी। नेउनि ठेवी निज पाया।।३।।

भजन

रेवणसिद्धा दयाळा। माझे पातक निर्दाळा।।